IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# डीएलएड प्रशिक्षणार्थियों में जल संरक्षण के उपायों के प्रति जागरूकता का अध्ययन

**निर्देशिक**

**श्रीमती आरती गुप्ता**
**व्याख्याता**

**प्रस्तुतकत्री**

**अंजना कुमारी यादव**
**एम एड छात्रा**

**सारांश**

शोध शोधकत्री द्वारा ली गई समस्या के अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि तथा अध्ययन उपकरण के रूप में डीएलएड प्रशिक्षणार्थियों में जल संरक्षण के उपायों के प्रति जागरूकता पर प्रयोग किया गया। इसके संकलन हेतु जयपुर जिले के जल संरक्षण कार्यक्रम के तहत स्थापित केंद्रों से d.El.Ed महाविद्यालय के 100 प्रशिक्षणार्थियों को चुना गया है ।

प्रदतो के संकलन हेतु सारणीयन के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा टी परीक्षण आदि सांख्यिकी विधियों का प्रयोग अध्ययन योजना के क्रियान्वयन हेतु किया गया है। प्रस्तावना जल के बिना जीवन असंभव है और यदि हम चारों तरफ देखे तो एक सतरंगी संसार पाएंगे। हमारे घर स्कूल सड़क गांव छोटे-छोटे पेड़ पौधे ऊंचे ऊंचे पर्वत रेगिस्तान पोखर तालाब , लहराते खेत और कल कारखाने प्रकृति की हर छटा मानव जीवन का आधार है । राजस्थान में जल संरक्षण रूपी सबसे बड़ी समस्या है । जल संरक्षण विषय को व्यापक अभियान की तरह सरकारी और गैर सरकारी दोनों स्तरों पर प्रसारित करने की जरूरत है। जिससे छोटे बड़े सभी विषय गंभीरता को समझें वह इस अभियान में अपनी भूमिका अदा करें। जल संरक्षण आज पूरे विश्व की मुख्य चिंता है। रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून, पानी गए सन भरे, मोती मानस चून। जेसे तकनीकी शब्दों का परिभाषा करण जल संरक्षण, उपाय जागरूकता।

**शोध के उद्देश्य**

1 ग्रामीण व शहरी डीएलएड प्रशिक्षणार्थियों में जल संरक्षण के कारणों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

2 ग्रामीण व शहरी डीएलएड प्रशिक्षणार्थियों में जल संरक्षण के प्रभाव के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

## शोध की परिकल्पना

1ग्रामीण व शहरी डीएलएड प्रशिक्षणार्थियों में जल संरक्षण के कारणों के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

2 ग्रामीण वह शहरी डीएलएड प्रशिक्षणार्थियों में जल संरक्षण के उपायों के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

## शोध विधि

शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है!

## शोध का न्यादर्श

*प्रस्तुत शोध के लिए जयपुर जिले के d.El.Ed महाविद्यालय में अध्ययन रथ छात्र अध्यापकों व छात्र अध्यापिका ओ का ग्रामीण व शहरी स्तर पर चयन किया गया है।*

## आंकड़ों का सारणीयन

विश्लेषण-सारणी प्रविधि का तरीका है जिसमें वर्गीकरण द्वारा की गई विवेचना को निश्चित रूप रेखा प्रदान की जाती है। सारणीयन किसी विशेष समस्या को स्पष्ट रूप देने के लिए आंकड़ों को गणना आत्मक तथ्यों के प्रदर्शन की एक ऐसी वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत स्तंभों में तथ्यों को प्रस्तुत किया जाता है। सारणीयन सामग्री संकलन और उसके द्वारा परिणाम निकालने के बीच की प्रक्रिया है। सामग्री का वर्गीकरण करने के पश्चात विश्लेषण किया जाता है। सामग्री का अध्ययन करना इसके अंतर्गत प्रस्तुत तत्वों को सरल अर्थों में व्यक्त करना।व्याख्या के उद्देश्य को इन पदों की नवीन व्याख्या के संदर्भ में समायोजन करना होता है।

## शोध का सीमांकन

प्रस्तुत शोध में अध्ययन हेतु जयपुर जिले की राज्य सरकार द्वारा संचालित शहरी एवं ग्रामीण पृष्ठभूमि के 2 महाविद्यालयों का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में डीएलएड प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया है जिसमें छात्राध्यापक और छात्र अध्यापिका दोनों को शामिल किया गया है।

## सांख्यिकी प्रविधियां विधिया

मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी परीक्षण

**शोध का निष्कर्ष व परिणाम**

-प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करके निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं!

1 डीएलएड के ग्रामीण व शहरी प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 96.16 व 98,48 प्राप्त हुआ है जबकि प्रमाणिक विचलन का मान 4 ,12 व 3,9 प्राप्त हुआ है। दोनों समूह के मध्य मानो व प्रमाणिक विचलन के मध्य तुलना करने पर टीम मूल्य 2,92 प्राप्त हुआ 7:30 तक 0,05 पर टीका प्रमाणित मूल्य 1,98 है।

अतः शोध कार्य हेतु पूर्व में निर्मित परिकल्पना डीएलएड के ग्रामीण व शहरी प्रशिक्षणार्थियों में जल संरक्षण के उपायों के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

**शैक्षिक निहितार्थ-**

किसी भी अनुसंधान की वास्तविक सार्थकता तभी होती है जब समाज व राष्ट्र के लिए उपयोगी हो यदि अनुसंधान के किसी क्षेत्र में उपयोगिता नहीं है तो ऐसे अनुसंधान धन, समय व श्रम खर्च करना व्यर्थ होगा। प्रस्तुत शोध कार्य डीएलएड स्तर के प्रशिक्षणार्थियों की जल संरक्षण के प्रति उपायों में जागरूकता जानने का लघु प्रयास किया है इस शोध कार्य के परिणाम तथ्य की ओर इंगित करते हैं शहरी प्रशिक्षणार्थियों में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक है इसका मुख्य कारण अभियान के प्रति अत्यधिक जानकारी का ना होना शहरी प्रशिक्षणार्थी इस कार्यक्रम के प्रति अधिक सजग पाए गए।

**सुझाव**

शोध अध्ययन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है इसके प्रारंभ एवं अंत की गणना करना असंभव होता है कोई भी शोध कार्य पूर्ण अंतिम नहीं होता है यह एक ऐसी श्रंखला है जिसमें एक कड़ी के संपन्न होने के साथ ही दूसरी कड़ी की शुरुआत होती है अध्ययन के परिणाम शोधार्थी को प्रस्तुत क्षेत्र में शोध की निरंतरता की आवश्यकता को प्रदर्शित करते हैं शोध अध्ययन के दौरान तथा संपन्न होने के बाद यह भी अनुभव किया गया है कि अभी तक इस क्षेत्र में शोध कार्य के लिए अवसर सेस है। 1 प्रस्तुत अध्ययन में केवल जल संरक्षण कार्यक्रम के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता का अध्ययन किया गया है जबकि जल संरक्षण कार्यक्रम के उपायोके प्रति जागरूकता का का भी अध्ययन किया जा सकता है

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1 बेस्ट, जेडब्ल्यू एंड जेम्स वि,केरिसर्च इन एजुकेशन पर्सन पब्लिकेशन हाउस न्यू दिल्ली 2008

2 ज्योति के, एसएंड राव डी,बी एजुकेशनल रिसर्च पेपर डेजरटेशन एंड नीलकमल पब्लिकेशन, मेरठ 2001

3 गुड सी,वी एवं स्केटस ई; मेथड्स ऑफ रिसर्च एप्लीटन सेंचुरी क्राफ्ट न्यूयॉर्क ,1964

4 हेमलता एस साइंटिफिक टेंपल एंड एजुकेशन कॉमन वेल्थ दिल्ली 2005

5 वेकल एडवर्ड एल एजुकेशन रिसर्च मैकमिलन कंपनी न्यूयॉर्क 1985